IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, November 2025 Impact Factor: 7.67

ekuo thou d fofo/k vk;kek dk vfHk0;Dr djrh fgUnh dFkk lkfgR; dh ykdfi; fo/kk % miU;kl

Mk- vfHk"kd dekj feJk
lgk;d ik/;kid] fgUnh

'kks/k lkjk'k %&

हिन्दी साहित्य को लोकप्रिय बनाने में उपन्यास विधा का योगदान अप्रतिम है। इसी को दृष्टिगत रखते हुए सुधी पाठकों के लिए उपन्यास विधा का परिचय, उसकी ऐतिहासिकता एवं स्वरूप का संक्षिप्त विश्लेषण इस आलेख में प्रस्तुत किया गया है।

'kCn cht %& मानव, जीवन, आयाम, अभिव्यक्त, कथा, साहित्य, लोकप्रिय, उपन्यास आदि।

iLrkouk %&

'उपन्यास' शब्द लिंग की दृष्टि से पुल्लिंग के अन्तर्गत आता है। इसका शाब्दिक अर्थ अमानत है तथा व्यापक रूप में उपन्यास का अर्थ ऐसी कल्पित और लंबी कहानी है जो अनेक पात्रों एवं घटनाओं से युक्त हो। उपन्यास को अंग्रेजी भाषा में Novel या Fiction भी कहते हैं जो शाब्दिक संरचना में संज्ञा के अन्तर्गत आते है। इसे मराठी भाषा में 'कादम्बरी' गुजराती में 'नवलकथा' तथा बांग्ला में 'नॉवेल' कहते हैं। ''हिन्दी में 'नॉवेल' के अर्थ में 'उपन्यास' शब्द का प्रथम प्रयोग भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने सन् 1875 ई0 में 'हरिश्चन्द्र चन्दिका' में प्रकाशित अपनी अपूर्ण रचना 'मालती' के लिए किया था।''[1]

'उपन्यास' शब्द उप तथा न्यास शब्दों के मेल से बना है, जिसका अर्थ है निकट रखी हुई वस्तु। एक अन्य अर्थ में उपन्यास को वाक्य का उपक्रम या बंधान कहा जाता है। निष्कर्ष रूप में हिन्दी कथा साहित्य में 'उपन्यास' से तात्पर्य अध्यायों या प्रकरणों में लिखी हुई वह कल्पित और बड़ी आख्यायिका जिसमें एक से अधिक पात्र और विस्तृत तथा सम्बद्ध घटनाएँ हों।

'उपन्यास' शब्द इतना व्यापक है कि इसे एक परिभाषा में समेट पाना सम्भव नहीं है। फिर भी अनेक विद्वानों ने अपने–अपने दृष्टिकोण से इसे परिभाषित करने का प्रयास किया है।

कुछ प्रमुख विदेशी विद्वानों ने उपन्यास की निम्नलिखित परिभाषाएँ दी हैं–

jkYQ QkDl d vuklkj& ''उपन्यास केवल काल्पनिक गद्य नही है, यह मानव जीवन का गद्य है, यह प्रथम कला है जिसने मानव को सम्पूर्णता में लेने और उसे अभिव्यक्ति देने का प्रयत्न किया है।''[2]

,oy poy d vuklkj& ''उपन्यास निश्चित आकार वाला गद्य रूप आख्यान है।''[3]

vuLV , cdj d vuklkj& ''उपन्यास को हम गद्यमय कल्पित आख्यान के माध्यम से की गई जीवन की व्याख्या कह सकते है।''[4]

उपर्युक्त विद्वानों के अतिरिक्त अन्य विदेशी विद्वानों ने भी उपन्यास को अपनी विचारधारा के अनुरूप परिभाषित किया है।

इनके अतिरिक्त भारतीय विद्वानों ने भी उपन्यास को परिभाषित किया है, जो निम्नलिखित हैं।

IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, November 2025 Impact Factor: 7.67

eq'kh izsepUn ds vuqlkj& ''मैं उपन्यास को मानव जीवन का चित्र समझता हूँ। मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व है।''[5]

Mk- HkxhjFk feJ ds vuqlkj& ''युग की गतिशील पृष्ठभूमि पर सहज शैली में स्वाभाविक जीवन की एक पूर्ण व्यापक झाँकी प्रस्तुत करने वाला गद्यकाव्य उपन्यास कहलाता है।''[6]

Mk- ';kelqUnj nkl ds vuqlkj& ''उपन्यास मनुष्य के वास्तविक जीवन की काल्पनिक कथा है।''[7]

vKs; ds vuqlkj& ''उपन्यास व्यक्ति के अपनी परिस्थितियों के साथ संबंध की अभिव्यक्ति के उत्तरोत्तर विकास का प्रतिनिधित्व करता है।''[8]

vkpk;Z jkepUnz 'kqDy ds vuqlkj& ''वर्तमान जगत में उपन्यासों की बड़ी शक्ति है। समाज जो रूप पकड़ रहा है, उसके भिन्न–भिन्न वर्गों में जो प्रवृत्तियाँ उत्पन्न हो रही हैं, उपन्यास उनका विस्तृत प्रत्यक्षीकरण ही नहीं करते, आवश्यकतानुसार उनके ठीक विन्यास, सुधार अथवा निराकरण की प्रवृत्ति भी उत्पन्न कर सकते है। ......लोक या किसी जन समाज के बीच काल की गति के अनुसार जो मूढ़ और चित्य परिस्थितियाँ खड़ी होती रहती हैं, उनको गोचर रूप में सामने लाना और कभी–कभी निस्तार का मार्ग भी प्रत्यक्ष करना उपन्यास का काम है।''[9]

Mk- y{ehlkxj ok".ks; ds erkuqlkj& ''उपन्यास यथार्थ मानव अनुभवों एवं सत्य का आंकलन है, वह जीवन की एकता में अनेकता तथा अपूर्णता में समग्रता स्थापित करने का प्रयत्न करता है।''[10]

vkpk;Z uUnnqykjs okt is;h ds vuqlkj& ''उपन्यास आधुनिक युग का महाकाव्य है। इसमें मानव जीवन और मानव चरित्र का चित्रण उपस्थित किया जाता है। वह मनुष्य के जीवन और चरित्र की व्याख्या करता है।''[11]

Mk- xqykcjk; ds erkuqlkj& ''उपन्यास कार्य–कारण श्रृंखला में बँधा हुआ वह गद्य कथानक है जिसमें अपेक्षाकृत अधिक विस्तार, पेचीदगी के साथ वास्तविक जीवन का प्रतिनिधित्व करने वाले व्यक्तियों से संबंधित वास्तविक या कल्पनिक घटनाओं द्वारा, मानव जीवन के सत्य का रसात्मक रूप से उद्घाटन किया जाता है।''[12]

U;w bxfy'k fMD'kujh esa miU;kl dh ifjHkk"kk esa dgk x;k gS& ''वृहत आकार का गद्य आख्यान या वृतान्त जिसके अन्तर्गत वास्तविक जीवन के प्रतिनिधित्व का दावा करने वाले पात्रों और कार्यों को कथानक में चित्रित किया जाता है।''[13]

उपर्युक्त दी गई विभिन्न परिभाषाओं के अतिरिक्त अन्य परिभाषाएं उपन्यास को परिभाषित करने के लिए दी गई है।

निष्कर्ष रूप में उपन्यास हिन्दी कथा साहित्य की वह विधा है जिसमें सम्पूर्णता, सजीवता, सरसता व काल्पनिकता का समन्वय करते हुए पात्रों व घटनाओं का यथास्थिति समग्र विवेचन व विश्लेषण करते हुए कथा को चरमोत्कर्ष पर पहुँचाया जाता है।

यह एक व्यापक फलक से परिपूर्ण विधा है जिसमें कथा साहित्य की समस्त प्रवृत्तियाँ व समस्त तत्व विद्यमान होते हैं।

उपन्यास कथा साहित्य की लोकप्रिय विधा है जो सतत रूप से अपने विकसित व परिमार्जित रूप में गतिशील है।

miU;kl dk Lo:i %&

'उपन्यास' शब्द 'उप' तथा 'न्यास' शब्दों के मेल से बना है, जिसका अर्थ है, 'समीपी रचना'। साहित्य के अनुसार उपन्यास वह कृति है, जिसे पढ़कर ऐसा लगे कि यह हमारी ही है, इसमें हमारे ही जीवन का प्रतिबिम्ब हमारी ही भाषा में प्रयुक्त हुआ है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, November 2025 Impact Factor: 7.67

उपन्यास आधुनिक युग की देन है तथा हमारी अन्तः व बाह्य जगत की जितनी यथार्थ एवं सुन्दर अभिव्यक्ति उपन्यास में दिखाई पड़ती है, उतनी किसी अन्य विधा में नहीं। इसमें युग विशेष के सामाजिक जीवन और जगत की झाँकिया संजोई जाती हैं। मनोविज्ञान की सबसे मार्मिक अभिव्यक्ति उपन्यास साहित्य में ही मिलती है।

उपन्यास के द्वारा लेखक, पाठक के सामने अपने हृदय की कोई विशेष बात, कोई नवीन मत या नवीन विचार प्रस्तुत करना चाहता है। साहित्य के जितने रूप विधान होते हैं उनमें उपन्यास का रूप सर्वाधिक लचीला है, वह परिस्थिति के अनुसार कोई भी रूप धारण कर लेता है, इसलिए इसमें एक दिन, एक वर्ष या एक युग की कथा भी हो सकती है। इसमें घटनाएँ कैसी भी हों परन्तु उनमें सम्बन्ध या तारतम्य अवश्य होता है।

miU;kl d: rRo %&

उपन्यास के स्वरूप निर्धारण में सबसे महत्वपूर्ण योगदान इसके तत्वों का होता है जो इसे दशा व दिशा दोनों प्रदान करते हैं। उपन्यास के तत्व निम्नलिखित हैं –

1. कथावस्तु
2. पात्र एवं चरित्र–चित्रण
3. संवाद या कथोपकथन
4. वातावरण या देशकाल
5. भाषा शैली
6. जीवन दर्शन या उद्देश्य

अधिकतर विद्वानों ने उपन्यास के इन्हीं छः तत्वों को मान्य किया है।

Mk- 'kkfUrLo:i xIr उपन्यास के इन तत्वों को समझाते हुए लिखते हैं– "किसी भी उपन्यास में कुछ घटनाएँ और कार्यों का चित्रण होता है, उन बातों का वर्णन होता है जिन्हें व्यक्ति करते या झेलते हैं। यही घटनाएँ और कार्य उपन्यास के कथानक का निर्माण करते हैं तथा ये व्यक्ति उपन्यास के पात्र कहलाते हैं। इन पात्रों का पारस्परिक संलाप उपन्यास के तीसरे तत्व को जन्म देता है जिसे हम कथोपकथन कहते हैं। जिस स्थान पर और जिस समय में घटनाएँ घटित होती हैं, वे वातावरण का निर्माण करते हैं। अतः उपन्यास का चौथा तत्व वातावरण कहलाता है। उसका पाँचवाँ तत्व है, शैली अर्थात् वह विधान जिसके द्वारा वह अपनी कथा प्रस्तुत करता है। इसके अतिरिक्त कलाकार की अपनी जीवन दृष्टि होती है, समस्याओं के प्रति अपना दृष्टिकोण होता है। उसी जीवन दृष्टि के आलोक में वह अपने उपन्यास की घटनाओं का ताना–बाना बुनता है, पात्रों को प्रस्तुत करता है इसे हम उपन्यास का छठा तत्व जीवन दर्शन कहते हैं।"[14]

1½ dFkkud@dFkkoLr: %&

कथानक किसी भी उपन्यास का प्रथम तथा सबसे महत्वपूर्ण तत्व है। अंग्रेजी में इसे प्लाट कहा जाता है। विविध घटनाओं के संयोजन को कथानक कहते हैं। किसी बड़ी इमारत में जो स्थान नींव का होता है वही उपन्यास में कथानक का होता है।

foukn'kdj 0;kl d: erku|kj& "उपन्यास में कथानक का वही स्थान है जो शरीर में हड्डियों का। जिस प्रकार शरीर के लिए माँस–पेशियों आदि की आवश्यकता आवरण के रूप में होती है, उसी प्रकार भाषा, शैली और चरित्र–चित्रण की उपन्यासों में। बिना हड्डियों के जैसे मांस–पेशियाँ स्थिर नहीं रह सकतीं, वैसे ही बिना कथानक के किसी भी उपन्यास का ढाँचा नहीं खड़ा किया जा सकता।"[15]

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, November 2025 Impact Factor: 7.67

उपन्यास की मूलकथा या कहानी को उसकी कथावस्तु कहते हैं। डॉ. प्रतापनारायण टंडन ने कथानक के सम्बन्ध में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए लिखा है– ''कथानक घटनाओं का वह साधारण या जटिल ढाँचा है जिसके द्वारा किसी उपन्यास की रचना होती है। बगैर कथानक के किसी भी उपन्रूास की कल्पना करना ही मुश्किल है।''

''यद्यपि आधुनिक युग में ऐसे भी उपन्यास लिखे जाते हैं जिनमें कथानक का नितान्त आभाव होता है या कथावस्तु अत्यन्त सूक्ष्म या विरल होती है। तथापि यदि उपन्यास को उपन्यास बनाना है, तो उसके कथानक का महत्व अस्वीकार नहीं किया जा सकता। उपन्यास में और कुछ हो या न हो, कहानी अवश्य होती है। अतः कथावस्तु को उपन्यास का प्राण कहा गया है।''[16]

किसी भी उपन्यास की मूलकथा या कहानी को इसकी कथावस्तु कहते है। डॉ. रामलखन शुक्ल ने उपन्यास के कथानक को दो भागों में बाँटा है– सरल और गुम्फित। 'सरल' कथानक में एक ही कहानी होती है, उसमें सहायक कहानियाँ नहीं होतीं। 'गुम्फित' कथानक में एक से अधिक कहानियाँ होतीं हैं प्रधान कहानी को अधिकारिक और गौण को प्रासंगिक कहते है।''[17]

कुल मिलाकर 'कथानक' उपन्यास का वह तत्व है जिसके इर्द–गिर्द समस्त औपान्यासिक तत्व घूमते नजर आते हैं।

अर्थात् 'कथानक' उपन्यास रूपी महल का वह ढाँचा है जिस पर सम्पूर्ण उपन्यास रूपी इमारत की नींव टिकी होती है तथा इसी पर अन्य औपन्यासिक तत्वों का समावेश कर इस इमारत का रंग रोगन किया जाता है। समस्त तत्वों से समावेशित होकर किसी भी उपन्यास का कथानक एक सुसज्जित और व्यवस्थित उपन्यास का निर्माण करता है जो हिन्दी कथा साहित्य की एक अमूल्य निधि है।

2½ ik= ,oa pfj=&fp=.k %&

उपन्यास का दूसरा महत्वपूर्ण तत्व है– उपन्यास के पात्र और उनका चरित्र–चित्रण। कोई भी पाठक उपन्यास पढ़ने के बाद हो सकता है कि उसके कथानक को भूल जाय, लेकिन उसके पात्र और उनका चरित्र, पाठक के मनोमस्तिष्क पर अमिट छाप छोड़ते है।

मुंशी प्रेमचन्द के उपन्यास समग्र साहित्य जगत में अपने पात्रों एवं उनके चरित्र–चित्रण के बल पर अपनी लोकप्रिय ख्याति बनाए हुए हैं। वे स्वयं भी यही कहते थे कि– ''मैं उपन्यास को मानव जीवन का चित्र समझता हूँ। मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व है।''[18]

उपन्यासकार पात्रों के माध्यम से ही जीवन के यथार्थ को प्रस्तुत करता है। इसलिए वे पात्र हमारे नजदीक या आसपास की दुनिया के ही लगते हैं। अतः ''यह आवश्यक है कि उपन्यास के पात्र भी सजीव, स्वाभाविक एवं सहज हों, वे न तो अलौकिक हों न असामान्य। उनकी प्रथम आवश्यकता यह है कि वे अपने कार्यों एवं विचारों द्वारा हमारी कल्पना में साकार हो उठें– हम उनसे उसी प्रकार सहानुभूति, घृणा और प्रेम कर सकें, जैसे अपने जीवन में आने वाले व्यक्तियों में करते हैं। उपन्यासकार की महानता इसी बात पर निर्भर करती है कि उसके पात्र कितनी समय तक हमारे स्मृति पटल पर अंकित रहते हैं, और हमारी भावनाओं को किस मात्रा में प्रभावित करते हैं।''[19]

उपन्यास के पात्रों एवं आम आदमी में समानता होनी चाहिए, अन्यथा पाठक को पात्रों से स्वयं के सुख–दुःख की संवेदनशीलता नहीं प्राप्त होगी। पाठक की तो यही अभिलाषा होगी कि उपन्यास के पात्र भी उसी की तरह हँसते, रोते हों, उसी की तरह समस्याओं से घिरे हो।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, November 2025 Impact Factor: 7.67

''ऐसे पात्रों का अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व होता है। वे घटनाओं और परिस्थितियों को जन्म देते है; वे उस संघर्ष–बाह्य तथा आंतरिक के लिए उत्तरदायी होते हैं जो उपन्यास का प्राण है। ऐसे पात्र लेखक के हाँथ की कठपुतली न होकर स्वतंत्र गति से अपना विकास करते हैं।''[20]

निष्कर्षतः पात्रों के चरित्र–चित्रण के अन्तर्गत बाह्यपक्ष में व्यक्ति का आकार, वेश–भूषा, बात–चीत करने का ढंग, आचार–विचार, रहन–सहन, उसके विशिष्ट कार्य कलाप आदि का समावेश होता है। जबकि आन्तरिक पक्ष के अन्तर्गत उसके भाव–विचार, उसकी मान्यताएँ, उसकी सहनशीलता, उदारता आदि का समावेश होता है। इसका सम्बन्ध पात्रों के मनोवैज्ञानिक पक्ष से होता है। सामान्यतः चरित्र–चित्रण की दो पद्धतियाँ प्रचलन में हैं –

1. अप्रत्यक्ष चित्रण विधि
2. प्रत्यक्ष चित्रण विधि

पात्रों के चरित्र–चित्रण की चाहे कोई भी विधि क्यों न अपनाई जाय, परन्तु उनमें स्वाभाविकता का गुण होना चाहिए, पात्रों का व्यवहार ऐसा होना चाहिए जो एक आम आदमी का होता है। लेखक को अस्वाभाविकता के दोष से बचना चाहिए।

3½ lokn ;k dFkkidFku %&

किसी उपन्यास में पात्रों के आपसी वार्तालाप को संवाद या कथोपकथन कहा जाता है। मूल रूप से यह नाटक का प्रमुख तत्व है, लेकिन साहित्य की अन्य विधाओं में भी इसका व्यापक प्रयोग होता है। इसका सम्बन्ध उपन्यास के कथावस्तु तथा पात्र दोनों से होता है। संवादों के माध्यम से एक ओर कथा का विकास होता है, दूसरी ओर उपन्यास के पात्रों का परिचय भी मिलता है तथा उनके चरित्र का उद्घाटन भी होता है।

''जो वार्तालाप कथानक को अग्रसर नहीं करता या चरित्र पर प्रकाश नहीं डालता, वह चाहे कितना भी सजीव क्यों न हो, उपन्यास में उसका मूल्य दो कौड़ी का भी न होगा। उपन्यास के इसी तत्व के कारण ही उसे जेबी–थियेटर कहा गया है। इसके कारण उपन्यास में सहजता एवं स्वाभाविकता आती है।''[21]

अक्सर लेखक संवाद के सहारे कई ऐसी घटनाओं का उल्लेख कर देता है जिसे वह अपनी मूल कथा में विस्तार से नहीं दिखा पाता। ''उपन्यासकार कथोपकथन के माध्यम से अपने न होने की क्षतिपूर्ति भी करते है।''[22]

अर्थात् वह प्रत्यक्ष रूप से उपन्यास में उपस्थित न होते हुए भी अपने पात्रों के वार्तालाप के माध्यम से बहुत कुछ कह देता है। संवाद के द्वारा पात्रों के आन्तरिक द्वन्द्व को भी चित्रित किया जाता है। संवादों के उचित प्रयोग से उपन्यास में नाटक की तरह सजीवता भी आ जाती है।

संवाद पात्रों के अनुरूप होना चाहिए। पात्र जिस समाज, जाति व देश से जुड़ा हो उसी के अनुरूप उसकी भाषा होनी चाहिए। इसमें सरलता, सहजता, आकर्षण, सक्षिप्तता, सुबोधता, रोचकता आदि गुणों का समावेश होना चाहिये। इसके अतिरिक्त देश–काल, परिस्थिति एवं घटना को ध्यान में रखकर ही संवादों की रचना होनी चाहिए। निष्कर्ष रूप में संवादों का प्रयोग उद्देश्यपूर्ण एवं विवेकपूर्ण होना चाहिए।

4½ okrkoj.k ;k n`'kdky %&

यूनानी समाजशास्त्री अरस्तु ने कहा है कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और कोई भी समाज किसी न किसी देश में होता है तथा उसका अपना एक निश्चित समय होता है। कहने का तात्पर्य यह है कि मनुष्य अपने समाज के साथ देश और

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, November 2025 Impact Factor: 7.67

काल की सीमाओं से बँधा होता है। अर्थात् मनुष्य के व्यक्तित्व के निर्माण में तत्कालीन वातावरण और परिस्थितियों का पूर्ण योगदान होता है।

अतः किसी भी उपन्यास में देशकाल या वातावरण के विवेचन के बिना उसकी रचना सम्भव नहीं है। यह उपन्यास का एक महत्वपूर्ण तत्व है जो कथानक के समुचित विकास में अपनी महत्ता को प्रतिपादित करता है। देशकाल या वातावरण का चित्रण उपन्यास को वास्तविकता प्रदान करता है। इसके महत्व को स्पष्ट करते हुए प्रसिद्ध रूसी उपन्यासकार दोस्त्योवस्की ने लिखा है कि– ''पात्र इतने यथार्थ है कि हम उनमें अपने आपको रख सकें और वातावरण इतना यथार्थ हो कि हम उसमें चल फिर सकें।''[23]

उपन्यास में देशकाल या वातावरण के महत्व के बारे में साहित्यकार बाबू गुलाबराय ने लिखा है कि– ''व्यक्ति के निर्माण में वातावरण का बहुत कुछ हाथ होता है। जिस प्रकार बिना अँगूठी के नगीना शोभा नहीं देता उसी प्रकार बिना देशकाल के पात्रों का व्यक्तित्व भी स्पष्ट नहीं होता है और घटनाक्रम को समझने के लिए भी इसकी आवश्यकता होती है। आजकल बढ़े हुए वस्तुवाद के समय में देशकाल का महत्व और भी बढ़ गया है।''[24]

हिन्दी में आंचलिक उपन्यासों के सृजन के लिए तो देशकाल या वातावरण उपन्यास के प्राणतत्व के रूप में कार्य करता है। फणीश्वर नाथ रेणु जी के उपन्यासों में बिहार का 'पूर्णिया' जिला तथा नागार्जुन जी के उपन्यासों में बिहार का 'दरभंगा' जिला पूर्णतः मूर्तिमान हो उठे हैं। वातावरण के उपयुक्त चित्रण के लिए स्थान एवं समय का सम्यक ज्ञान आवश्यक होता है। ऐतिहासिक उपन्यासों में भी किसी काल विशेष के चित्रण के लिए ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक ज्ञान का सहारा लेना आवश्यक होता है।

कुल मिलाकर जिस परिस्थिति व स्थान में उपन्यास की रचना होती है, उसी के अनुरूप वातावरण का उपन्यास में उपस्थित होना अनिवार्य माना गया है। ''कई बार उपन्यास में वातावरण का चित्रण पात्र की मानसिकता को व्यक्त करता है। घटना, पृष्ठभूमि में वातावरण का चित्रण उपन्यास में काव्यात्मकता, कलात्मकता एवं चमत्कार की सृष्टि करता है। जैसे किसी के मरते समय दीपक का बुझ जाना, सूर्य का अस्त हो जाना अथवा घड़ी का बन्द हो जाना वातावरण में अनुकूलता उत्पन्न कर शब्दों को एक विशेष शक्ति प्रदान कर देता है।''[25]

निष्कर्षतः देशकाल या वातावरण उपन्यास का वह अनिवार्य तत्व है जो उसे एक व्यवस्थित पृष्ठभूमि प्रदान करता है। इस तत्व के बिना उपन्यास के कथानक का समुचित व सरस विकास सम्भव नहीं है।

5½ Hkk"kk&'kyh %&

भाषा–शैली उपन्यास का मूल तत्व माना जा सकता है। किसी भी साहित्यिक विधा की अभिव्यक्ति का सर्वोत्कृष्ट माध्यम भाषा होती है। कथाकार जिस प्रकार के विचार लेकर चलता है, उसके अनुसार उसकी भाषा–शैली निर्मित होती है। उपन्यास की भाषा सरल, सहज तथा पात्रानुकूल होती है। सफल भाषा–शैली पर ही उपन्यास की सफलता निर्भर करती है।

''उपन्यासकार को अपनी भावाभिव्यक्ति के लिए अत्यन्त सरल और सरस भाषा–शैली को अपनाना चाहिए, भाषा प्रयोग यदि सामाजिक वातावरण के अनुकूल हो तो अच्छा है, किन्तु उसमें बहुरूपियापन नहीं होना चाहिए। उपन्यास की रचना शैली यथा सम्भव एक जैसी रखनी चाहिए। हिन्दी में उपन्यास लेखन की चार शैलियाँ प्रचलित हैं –

1. कथा शैली, जैसे– प्रेमचन्द का 'रंगभूमि'
2. आत्मकथा शैली, जैसे– इलाचंद जोशी का 'घृणामयी'

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, November 2025 Impact Factor: 7.67

3. पत्र शैली, जैसे– उग्र जी का 'चंद हसीनों के खतूत'

4. डायरी शैली, जैसे– 'शोणित दर्पण'''[26]

कोई भी उपन्यासकार जितनी ही सरल, सुन्दर, भाषा में अपनी बात प्रस्तुत करता है उसकी रचना उतनी ही उत्कृष्ट कोटि की होती है। इस प्रकार यदि कहा जाय कि उपन्यासकार शैली के आधार पर ही परखा जाता है, तो असत्य न होगा।

उपन्यास में आंचलिक ऐतिहासिक एवं सामाजिक तथ्यों का बोध शैली के द्वारा ही करवाया जाता है। अतः उसमें प्रसाद गुण की प्रधानता आ जाती है। वैसे उपन्यास में प्रसंग के अनुसार ओज एवं माधुर्य गुण का समावेश भी होता है। कथा में प्रभावशीलता लाने के लिए मुहावरे एवं लोकोक्तियों तथा शब्द शक्तियों का भी यथोचित प्रयोग होता है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि सरस व सरल भाषा शैली उपन्यास की सफलता में महत्वपूर्ण होती है और इसीलिए यह उपन्यास का मूल तत्व मानी जाती है।

6½ thou n'ku ;k mnn'; ¼&

संसार में कोई भी कार्य बिना कारण या उद्देश्य के नहीं किया जाता है। अर्थात् मनुष्य जब भी कोई कार्य करता है तो उसके पीछे कोई न कोई कारण, उद्देश्य या जीवन दर्शन निहित होता है। उपन्यासकार जब उपन्यास की रचना करता है तो उसका एक निश्चित उद्देश्य होता है। प्रारम्भ में हिन्दी के उपन्यास मनोरंजन, उपदेश एवं समाज सुधार को उद्देश्य बनाकर लिखे गये थे। परन्तु प्रेमचन्द के समय तक आते–आते उपन्यास का जीवन दर्शन यथार्थ का चित्रण हो गया जो अपने आपमें आदर्श को समाहित किये हुए था।

मुंशी प्रेमचन्द जी लिखते हैं कि– ''कला, कला के लिए का समय वह होता है जब देश सम्पन्न एवं सुखी हो, जब हम देखते हैं कि हम भाँति–भाँति के राजनीतिक और सामाजिक बन्धनों से जकड़े हुए हैं, जिधर निगाह उठती है, उधर दुःख और दरिद्रता के भीषण दृश्य दिखाई देते हैं, विपत्ति का करूण क्रन्दन सुनाई पड़ता है तो कैसे सम्भव है कि किसी विचारशील प्राणी का हृदय न दहल उठे।''[27]

अर्थात् यथार्थ को प्रस्तुत करना उपन्यास का मूल उद्देश्य है। हिन्दी में जैनेन्द्र कुमार और अज्ञेय जी भले ही कुछ व्यक्तिवादी चिंतन को लेकर आगे बढ़ रहे हों, किन्तु उसके मूल में यथार्थवादी चेतना ही निहित है। प्रत्येक उपन्यासकार की अपनी एक जीवन दृष्टि होती है और यह दृष्टि उसके लेखन में प्रत्येक पृष्ठ में प्रतिबिम्बित होती है।

कुल मिलाकर उद्देश्य या जीवन दर्शन उपन्यास का वह अति महत्वपूर्ण तत्व है जो उपन्यास को एक व्यवस्थित, सरल व सहज कथावस्तु उपलब्ध करवाता है और जिसके बिना उपन्यास की रचना सम्भव नहीं है।

7½ miU;kl dh ,frgkfldrk ¼&

उपन्यास हिन्दी गद्य साहित्य की आधुनिकतम विधाओं में से एक है। हिन्दी कथा साहित्य में उपन्यास का जन्म लगभग 150 (डेढ़ सौ) वर्ष पूर्व माना जा सकता है। हालांकि उपन्यास के जन्म से पूर्व कथा का अस्तित्व था जो कि श्रव्य रूप में प्रचलित था। शायद उपन्यास और कथा में मूल अन्तर यही है कि जिस प्रकार कथा का श्रव्य होना आवश्यक है, उसी प्रकार उपन्यास का पाठ्य होना आवश्यक है।

हिन्दी में उपन्यास के जन्म में तत्कालीन परिस्थितियों का भी महत्वपूर्ण योगदान है। तेरहवीं सदी में यूरोप में मुद्रण यंत्र के अविष्कार के बाद हिन्दी गद्य साहित्य में भी अभूतपूर्व तीव्रता देखने को मिली। पूँजीवाद के उदय का समय भी लगभग यही

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, November 2025 Impact Factor: 7.67

है। पूँजीवाद के साथ–साथ मध्यवर्ग का भी विकास हुआ, जो उपन्यास के विशाल पाठक वर्ग में तब्दील हुआ और उपन्यास के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

हिन्दुस्तान में उपन्यास के विकास के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ औपनिवेशिक शासन के बाद निर्मित हुईं। कतिपय विद्वान सन् 1870 ई0 में पंडित गौरीदत्त द्वारा लिखित उपन्यास 'देवरानी जेठानी की कहानी' को हिन्दी का प्रथम उपन्यास मानते हैं। उपन्यास के विकास में तत्कालीन पत्र–पत्रिकाओं का भी योगदान रहा। क्योंकि इन पत्र पत्रिकाओं के माध्यम से हिन्दी में एक विशाल पाठक वर्ग तैयार हुआ जो कि उपन्यास रचना की वृद्धि में अति आवश्यक है। इन पात्रों में भारतेन्दु द्वारा प्रकाशित कविवचन सुधा (1867 ई.) का विशेष महत्व है। इसके बारे में अम्बिका प्रसाद वाजपेयी जी ने लिखा है कि– ''यद्यपि हिन्दी भाषा के प्रेमी उस समय बहुत कम थे, तो भी हरिश्चन्द्र के ललित लेखों ने लोगों के जी में ऐसी जगह कर ली थी कि कविवचन सुधा के हर नम्बर के लिये लोगों को टकटकी लगाए रहना पड़ता था।''[28]

fu"d"kr% तत्कालीन परिस्थितियों के सामूहिक योगदान से हिन्दी उपन्यास की यात्रा उसके जन्मोपरान्त अबाध गति से जारी है। इस विधा ने नितान्त रूप से हिन्दी साहित्य को रुचिकर बनाते हुए पाठकों को साहित्य से जोड़े रखा है। हिन्दी उपन्यास अपनी यात्रा में सतत् गति से ऊँचाईयों की ओर अग्रसर है।

lanHk lwph %&

1 पाण्डेय गोविन्द, पाण्डेय सरस्वती : 'हिन्दी भाषा एवं साहित्य का वस्तुनिष्ठ इतिहास', प्रथम संस्करण–2014, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ–265
2 नॉवेल एण्ड द पीपुल, पृष्ठ–52
3 भारद्वाज, हेतु, सुमनलता : 'हिन्दी उपन्यास का उद्भव और विकास', पृष्ठ–3
4 भारद्वाज, हेतु, सुमनलता : 'हिन्दी उपन्यास का उद्भव और विकास', पृष्ठ–3
5 प्रेमचन्द : कुछ विचार, पृष्ठ–71
6 डॉ. मिश्र, भगीरथ : 'काव्यशास्त्र', पृष्ठ–79
7 डॉ. दास, श्यामसुन्दर : 'साहित्यलोचन', पृष्ठ–180
8 डॉ. भारद्वाज, हेतु, डॉ. सुमनलता : 'हिन्दी उपन्यास का उद्भव और विकास', पृष्ठ–3
9 शुक्ल, रामचन्द्र : 'हिन्दी साहित्य का इतिहास', पृष्ठ–513
10 वार्ष्णेय लक्ष्मीसागर : ''हिन्दी उपन्यास : उपलब्धियाँ'', पृष्ठ–11
11 वाजपेयी नन्ददुलारे : ''आधुनिक साहित्य'', पृष्ठ–173
12 गुलाबराय : 'काव्य के रूप', पृष्ठ–15
13 भारद्वाज, हेतु, डॉ. सुमनलता : 'हिन्दी उपन्यास का उद्भव और विकास', पृष्ठ–2
14 गुप्त शान्तिस्वरूप : 'पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धान्त', पृष्ठ–361–362
15 गुप्त शान्तिस्वरूप : 'पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धान्त', पृष्ठ–362
16 गुप्त शान्तिस्वरूप : 'पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धान्त', पृष्ठ–362
17 शुक्ल रामलखन : 'हिन्दी उपन्यास कला', पृष्ठ–21

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, November 2025
Impact Factor: 7.67

18 प्रेमचन्द : कुछ विचार, पृष्ठ–71

19 गुप्त शान्तिस्वरूप : 'पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धान्त', पृष्ठ–366

20 गुप्त शान्तिस्वरूप : 'पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धान्त', पृष्ठ–366

21 देसाई पासकान्त : 'हिन्दी उपन्यास साहित्य की विकास परम्परा में साठोत्तरी उपन्यास, पृष्ठ–29–30

22 देसाई पासकान्त : 'हिन्दी उपन्यास साहित्य की विकास परम्परा में साठोत्तरी उपन्यास, पृष्ठ–30

23 प्रियदर्शनी सुषमा : हिन्दी उपन्यास, पृष्ठ–25

24 गुलाबराय बाबू : 'काव्य के रूप', पृष्ठ–168

25 गुलाबराय बाबू : 'काव्य के रूप', पृष्ठ–169–170

26 त्रिपाठी रामसागर : 'बृहद साहित्यिक निबंध', पृष्ठ–776

27 प्रेमचन्द : कुछ विचार, पृष्ठ–82

28 बाजपेयी अम्बिका प्रसाद : 'समाचार पत्रों का इतिहास', 1953, पृष्ठ–129–130